मीरा की भक्ति भावनाः प्रेम, माधुर्य और वैराग्य का संगम

डॉ पूजा जोरासिया

सहायक आचार्य हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय सीसवाली बारां

सारांश

मीरा एक प्रमुख मध्यकालीन भक्त कवयित्री हैं, जिनकी कविताओं में गहरी भक्तिभावना की अभिव्यक्ति होती है। उनका जीवन और लेखन भक्ति आंदोलन के एक महत्वपूर्ण पहलू का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें उन्होंने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को अद्भुत रूप से व्यक्त किया है। उनकी भक्ति प्रेम रसमार्गी थी, जिसमें श्री कृष्ण को प्रेम का आलम्बन मानते हुए, वे अपने प्रेम को ब्रजगोपिका के समान चित्रित करती हैं। नाभादास ने मीरा की भक्ति को प्रेमभाव से ओतप्रोत बताया है, जो माधुर्य और विरह भावना से गहराई से जुड़ी है।

मीरा की रचनाओं में प्रेमाभक्ति के साथ–साथ वैराग्यमूलक दास्य भावना का भी समावेश मिलता है। यह उनके गहरे प्रेम और आस्था का प्रतीक है, जिसमें प्रेम के साथ–साथ विरह का दर्द भी स्पष्ट रूप से उभरता है। मीरा और कृष्ण के बीच का गहरा भावनात्मक संबंध उनकी भक्ति को विशेष बनाता है, जिसे भक्तों और संतों द्वारा सर्वोच्च माना जाता है। उनके भक्ति गीतों में यह प्रेमाभक्ति परिलक्षित होती है, जो न केवल धार्मिक अनुशासन का पालन करती है, बल्कि मानवता और प्रेम के सार्वभौमिक मूल्यों को भी प्रस्तुत करती है।

मीरा की कविताओं में प्रेम की गहराई और वैराग्य का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। उनके गीतों में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वे अपने आराध्य कृष्ण के प्रति किस प्रकार की दीवानगी और भक्ति रखती थीं। उनकी कविताओं का अध्ययन करते समय, हम यह देख सकते हैं कि कैसे वे भक्ति को एक अद्वितीय अनुभूति के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जिसमें व्यक्तिगत भावनाएं और आध्यात्मिक साधना का सुंदर मिलन होता है। उदाहरणस्वरूप, मीरा के कुछ प्रसिद्ध गीत इस प्रेमाभक्ति की छवि स्पष्ट रूप से चित्रित करते हैंः

(1) 'प्रेम भगति से पैण, म्हारो और णा जांणोरीत'

(2) 'मीरा सिरि गिरधर नट नागर, भगति रसीली जाँची री'

मीरा की भक्ति केवल एक धार्मिक साधना नहीं थी, बल्कि यह उनके जीवन का सार थी। उनके गीतों और कविताओं में जिस प्रकार कृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण की गहराई मिलती है, वह न केवल उनके आध्यात्मिक अनुभव का प्रतीक है, बल्कि एक मानवमूल्य के रूप में भी इसे देखा जा सकता है। मीरा की कविताएं समाज के लिए एक आदर्श बनीं, जो दिखाती हैं कि किस प्रकार प्रेम और भक्ति मनुष्य को अपने आराध्य के निकट लाती है। यही कारण है कि मीरा की भक्ति और उनके गीतों में वह अमरता और अनन्त प्रेम आज भी विद्यमान है, जो भक्ति साहित्य की धरोहर बन चुकी है।

इस प्रकार, मीरा की कविताएँ न केवल धार्मिकता का प्रतीक हैं, बल्कि वे प्रेम, समर्पण और मानवता की उच्चतम भावना को भी उजागर करती हैं। उनके योगदान को भक्ति साहित्य में हमेशा याद किया जाएगा, और उनकी रचनाएं आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी।

मूलशब्दः– स्पृहणीय, भावजगत, सात्विक, माधुर्य, भवसागर, आत्मनिवेदन, ऐषवर्यषाली, समस्यामूलक, भर्त्सना, परिप्रेक्ष्य, प्रामाणिक आदि।

भूमिका :–

मीरा, मेवाड़ राजघराने की बहु और मेड़ता राजघराने की कन्या, एक ऐसी भक्ति कवयित्री थीं, जिन्होंने अपने जीवन में कई सामाजिक और धार्मिक बाधाओं का सामना किया। राजपूताना में महिलाओं की स्वतंत्रता पर कठोर अंकुश था, जहां पति की मृत्यु के बाद पत्नी को सती प्रथा के तहत पति की चिता में जलने के लिए मजबूर किया जाता था। इस परंपरा का विरोध करते हुए मीरा ने न केवल इस बंधन को तोड़ा, बल्कि वैधव्य जीवन को अपनाते हुए राजमहल की चारदीवारी से बाहर निकलकर श्री कृष्ण की प्रेम में लीन हो गईं। उन्होंने श्री कृष्ण को पति के रूप में स्वीकार किया और उनकी आराधना के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया, यहां तक कि वे उनके रिझाने के लिए शृंगार भी करने लगीं।

इस भक्ति की राह में मीरा ने कई कठिनाइयों का सामना किया। परिवार के लोग उनके इस कार्य से नाराज हो गए, और उनके देवर ने तो उन्हें विष का प्याला भेजकर जान से मारने की कोशिश की। इसके बावजूद, मीरा ने न केवल सामाजिक, बल्कि धार्मिक परंपराओं को चुनौती देते हुए एक नई दिशा में आगे बढ़ने का साहस किया। उनके जीवन में दुःख और विरह का गहरा प्रभाव था, और उन्होंने अपने जीवन में जो नहीं पाया, उसे भक्ति के माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश की।हालांकि मीरा भक्ति में भी चैन नहीं पा सकीं, क्योंकि उन्हें कुल–कलंकिनी कहकर अपमानित किया गया। उनका जीवन एक सच्चाई के साथ संघर्ष में व्यतीत हुआ, और इस संघर्ष के परिणामस्वरूप उनकी हत्या का भी षड्यंत्र रचा गया। उनके पदों में उल्लास और वेदना का अद्भुत समन्वय है, जो उनके जीवन की कठिनाइयों को दर्शाता है। मीरा के जीवन और भक्ति की गहराई को समझने का यह प्रयास उन महान भावनाओं और संघर्षों की पड़ताल करने का एक महत्वपूर्ण कदम है, जो उनके काव्य में जीवंतता के साथ प्रकट होती हैं।

इस प्रकार, मीरा की भक्ति एक ऐसा रूप है जो न केवल व्यक्तिगत प्रेम को दर्शाता है, बल्कि समाज के प्रति एक महत्वपूर्ण सन्देश भी प्रदान करता है। उनके पदों में प्रेम की सरलता और भक्ति की गहराई हमें उनकी अंतर्दृष्टि और जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण की झलक देती है, जो आज भी प्रेरणादायक है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

मीरा बाई को भक्तिकालीन महिला कवयित्री के रूप में जो महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए, वह कुछ कारणों से उन्हें नहीं मिल सका है। राजकुल में पली–बढ़ी होने के नाते उनकी छवि को अक्सर केवल रमणी या सुंदरी के रूप में सीमित कर दिया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य मीरा की काव्य रचनाओं का गहन विश्लेषण कर, उनकी इस निर्मित छवि से बाहर निकलना और प्रेम में डूबी भक्ति की वास्तविक ध्वनि को उजागर करना है।

हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि मीरा का काव्य केवल उनके रूप या सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें गहरे भावनात्मक और आध्यात्मिक तत्व हैं। उनके गीतों में व्यक्त भक्ति और प्रेम की गहराई को समझना इस अध्ययन का मुख्य ध्येय है, जिससे उनकी रचनाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को पुनः स्थापित किया जा सके। मीरा की भक्ति भावना और उसके पीछे की प्रेरणाओं का विश्लेषण करके हम उनके वास्तविक स्थान को पहचानने का प्रयास करेंगे।

षोध पद्धति :–

मीरा से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, लेखों, पत्र–पत्रिकाओं तथापुस्तकालयों से समग्री एकत्र करना व अध्ययन करना। इसके अलावेसहयोगियों, मित्रों व विभिन्न कृष्ण भक्त संतों से संपर्क कर सामग्रीसंकलित करना।

मुख्य विषय :–

मुख्य विषयः

मीरा की भक्ति को किसी विशेष पंथ या परंपरा में सीमित नहीं किया जा सकता। उनकी भक्ति न केवल स्थापित परंपराओं का पालन करती है, बल्कि यह एक साहसिक विद्रोह भी है, जो समाज और परिवार की बंधनों के खिलाफ खड़ा होता है। इस दृष्टिकोण से, विद्वानों जैसे डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, प्रो. मैनेजर पाण्डेय, कुमकुम सांगरी, और परिता मुक्ता ने मीरा की भक्ति को उस युग के सामाजिक संदर्भ में देखा है। इसमें स्पष्ट रूप से उस समय की स्त्रियों के लिए निर्धारित रीति–रिवाजों और रूढ़ियों से मुक्ति की चाह का संघर्ष दिखता है।

मीरा की भक्ति में संयोग और विरह की गहरी अनुभूतियों का संगम है। उनके पदों में ये दोनों भावनाएँ एक साथ उपस्थित हैं, और इसके दो प्रमुख कारण हैं। पहले, मीरा का प्रेम आध्यात्मिक होने के साथ–साथ लौकिक भी है। 'गिरधर नागर' की भावनाएँ उनकी आध्यात्मिक यात्रा को दर्शाती हैं, लेकिन उनके अनुभव, जो उन्होंने इस भौतिक जगत में जीते हैं, उनके जीवन संघर्ष से उपजी हैं। मीरा का प्रेम आध्यात्मिक होने के बावजूद, यह मानसिक रूप से अनुभवित किया जाता है, न कि केवल शारीरिक रूप से। उनके संयोग और वियोग का अनुभव मुख्यतः मानसिकता का परिणाम है। भक्ति के उत्साह में भगवान निकटता का अनुभव कराते हैं, लेकिन भौतिक कठिनाइयों के चलते वह हमेशा पकड़ में नहीं आते, और इसलिए वह निकट होकर भी दूर लगते हैं।

दूसरा कारण मीरा का दुखद जीवन है। उनका बचपन माँ के बिना बीता, और युवावस्था में वह विधवा हो गईं। उनके पिता का सहारा भी जल्दी चला गया, और देवर के अत्याचारों ने उनके जीवन को और अधिक कठिन बना दिया। इस चिरविरहमय जीवन की चुनौतियों के कारण, मीरा ने जो कुछ जीवन में नहीं पाया, उसे वह भक्ति के माध्यम से प्राप्त करना चाहती थीं। उनके जीवन की त्रासदियों ने उन्हें भक्ति के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, जिससे उन्होंने प्रेम और भक्ति की एक नई परिभाषा स्थापित की।उनके समस्या मूलक प्रेम में जोअथक वेदना है और उस वेदना में जो अथक प्रेम है, वह इस तरहसे व्यक्त हुआ।

'हे री मैं तो दरद दिवाणी, मेरा दरद न जाणै कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, सोना किस विधि होय।
सुख संपत्ति में सब मिलि आवै, दुख में बलम न कोय।
मीरा के प्रभु पीर मिटैगो, जब वैद सांवलिया होय।

हिन्दी में समस्यामूलक प्रेम का जैसा चित्रण मीरा बाई ने किया वैसाअन्य से नहीं हो सका। प्रेम के दर्द की ऐसी तस्वीर आंकने वालाभी दूसरा कवि नहीं हुआ। सम्भवतः पारिवारिक, सामाजिक क्लेषों,प्रताड़नाओं और निन्दा आदि बाधाओं के सम्मुख आने पर मीरा काअन्तस जब स्वयं को आश्रयहीन अनुभव करता होगा तब उन्हीं क्षणोंप्रभु की सार्थकता, भक्तवत्सलता के समक्ष दया याचना करने कीओर वे प्रवृत हुई होंगी।
नारद भक्ति–सूत्र में भक्ति को द्विधा कहा गया है
(1) प्रेमरूपा और (2) गौणी

(1) प्रेमरूपा : कर्म, ज्ञान एवं योग से भी श्रेष्ठ **'प्रेमरूपा भक्ति'** कोमान्यता मिली है। मीरा के गीतों में सर्वत्र प्रेमरूपा भक्ति का ही मूलस्वर बिखरा हुआ है। इस भक्ति में डूबकर मीरा पूर्णतया गिरधरमयहो गई थीं। सांसारिक राग, विषयों को विष सदृष ही त्याग दियाथा। मीरा की यही प्रेमरूपाभक्ति निम्न पंक्तियों से गोचर होती है –

'भयाँ बावरा सुध बुध भूलाँ, पीव जाण्या म्हारी बात'
'इमरित पाई विष क्यूँ दीजै'
प्यालो इमरित छाड़या रे कुण पीवां कड़वां नीर पारी'

इस पंक्ति को प्राप्त करके भक्त समस्त सांसारिक बंधनों से मुक्त होजाता है। वह सिद्ध, अजर और तृप्त हो जाता है।अतः मीरा के गीतों से भी यही ध्वनित होता है कि वे प्रेमरूपा भक्तिका प्रसाद पाकर सांसारिक बंधनों से पूर्णतया मुक्ति पा चुकी थींऔर सिवाय गिरघर के उनकी सारी आकांक्षाएं समाप्त हो चुकी थीं।अतएवं भातएवं मीरा की प्रेमाभक्ति का आलंबन जो कृष्ण रूप है,जिसमें उनके लोभी नयन अटके फिर वापस न आ सके, यानी उसीरूप में संलग्न रह गए, उसका अनुभव मीरा को जिस परिस्थिति मेंहुआ वह द्रष्टव्य है –

'म्हां ठाढ़ी घर आपणे मोइन निकल्यां आय' (पद 13) मीरा कीपदावली

अन्य स्थान पर मीरा ने लिखा –

'कब री ठाढ़ी पंथ निहारां अपने भवन खड़ी (पद 14) मीरा कीपादावली

अपितु कृष्ण से मिलन का अर्थ भावजगत में कृष्ण का मिलन। अर्थातसाधु संगति में कृष्ण गुण कीर्त्तन। इस उद्देष्य की पूर्ति राणाकुलसे बाहर आकर सामान्य जीवन में धुलने मिलने से ही हो सकतीथी। मीरा ने लिखा –

'मीरा तो गिरधर बिन देखे, कैसे रहे घर बसि के (पद 7)

मीरा की भक्ति उतना ऐकांतिक नहीं है जितना समझ लिया जाताहै। भक्ति के कारण वे सामाजिक हैं।

(2) गौणी भक्ति : मीरा के गीतों में गौणी भक्ति के उदाहरण बहुतकम मिलते हैं। गौणी भक्ति के गुणभेद के आधार पर (क) तामसी(ख) राजसी एवं (ग) सात्विक, भेद किए गए हैं। उनमें से केवलसात्विकी गौणी भक्ति मीरा में है। मीरा की एकमात्र कामना यही हैकि –

'मीरा के प्रभु कब रे मिलेगां, थे विण रह्या णा जाये।'

सात्विक भक्ति के अन्तर्गत मीरा ने अपने समस्त कर्म–फलों कोभगवान के श्री चरणों में समर्पित कर दिया था। भवसागर से उद्धारकी चिन्ता, लोक–लाज, भय सब कुछ अपने गिरधारी के प्रति समर्पितकर स्वयं निष्चित हो गई थी।राजसी और तामसी गौणी भक्ति की मीरा को न तो आवष्यकता हीथी, न ही अवकाष।

गौणी भक्ति के आर्त्त विभेद के अन्तर्गत तीन भेद और किए गए है

(1) अर्थार्थी

(2) जिज्ञासु

(3) आर्त।

इनमें से मीरा में केवल आर्त भक्ति के उदाहरण ही मिलते हैं। साधनभेद की दृष्टि से भक्ति के दो भेद किए जाते हैं –

(1) अपरा और (2) परा

अतएव मीरा की भक्ति 'परा भक्ति' के अन्तर्गत आती है। इस भक्तिमें लक्ष्य की प्राप्ति ही सबकुछ है। इसके विपरीत 'अपरा' भक्तिसाधनों पर जोर देती हैं। मीरा की ही समस्त आकांक्षाएं, आषाएं औरसाधना का लक्ष्य प्रियतम श्रीकृश्ण की प्राप्ति है। अतः पराभक्ति हीमीरा की अभिप्रेत है। शास्त्रीय दृष्टि से पराभक्ति के छः भेद किएगए हैं–

(1) सिद्धा (2) प्रेमलक्षणा

(3) निष्काम (4) दुर्लभा

(5) अनन्या (6) निर्गुण

ये सारे भेद मीरा के गीतों में मिल जाते हैं।

मीरा की नवधा भक्तिः–

मीरा की संपूर्ण पदावली पर विषद दृष्टि डालने पर नवधा भक्ति केप्रायः समस्त उपादान लक्षित होते हैं।

श्रीमद्भागवत् में कहा गया है''श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्। अर्चनं बंदनं दास्यंसख्यमात्म निवेदनम्।''

अर्थात् श्रवण, कीर्त्तन, ईष्वर स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वन्दना,दास्यभक्ति, सख्य तथा अत्मनिवेदन। भक्ति इन्हीं नौ प्रकार की होतीहै। मीरा काव्य में नवधा भक्ति मौजूद है। मीरा ने भक्ति के सारेतत्व अपनाएं हैं। उनकी रचना में स्वाभाविक रूप से भक्ति के सारेरूप धुल–मिल गये हैं। सामान्यतः मीराबाई की सगुणोपासना संबंधीपदों को ध्यान में

रखकर विद्वानों ने मीराबाई की भक्ति–भावना कोवैष्णव परंपरा का माना है। वैष्णव भक्ति में भक्ति के छःअंग–आनुकुल्य–संकल्प, प्रातिकूल्य–वर्जन, गोप्तृत्व–वरण,रक्षण–विष्वास, आत्म निक्षेप, कार्पण्य माने गए हैं। इसी प्रकार भक्तिकी सात भूमिकाएं – दीनता, मानमर्षता, भर्त्सना, भयदर्षन, आष्वासन,मनोराज्य तथा विचारण मानी गई है। कुछ विद्धानों का मानना है किये सब मीरा बाई की सगुणोपासना संबंधी पद किस परंपरा में आतेहैं, यह अलग शोध का विषय है, परन्तु इतना स्पष्ट है कि मीरा केकृष्ण अवतारी हैं। उन्होंने द्रौपदी की लाज बचाई थी, प्रह्लाद केलिए नरसिंह रूप धारण किया था और डूबते हुए गजराज को उबाराथा। यथा–'हरि, तुम हरहु जन की भीर। द्रोपदी की लाज राखी तुरतबढ़ालो चीरभक्त कारन रूप नर हरि धर्यों आपु शरीर हरिनकसिपु मारिलीन्हौं धर्यो नाही धीरबूड़तो गजराज राख्यों कियों बाहर नीर। दासी मीरा लाल गिरधरचरण कंवल पै सीर।।

ये ही सगुण गिरिधर गोपाल मीरा के सबकुछ हैं, ये ही मीरा केस्वामी हैं यथा –
मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरों न कोई जाके सिर मोर मुकुट,मेरो पति सोई।

प्रासंगिकता :–

आज जब विभिन्न प्रकार के संत महात्माओं, साध्वियों ने भक्ति कोबाजार में परिवर्त्तित करके भक्ति का व्यावसायीकरण कर रखा है वविभिन्न प्रकार के कुकृत्यों में संलग्न रहते हैं तो ऐसे समय में मीराबाईकी भक्ति भावना की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। आज भारतमें जहां आसाराम बापू, बाबा राम रहीम, बाबा रामपाल, बाबा नित्यानंदस्वामी आदि संत व राधे माँ जैसी तथाकथित साधिका समाज केआंखों में धूल झोंककर धार्मिक चोला पहनकर न केवल करोड़ों रूपयेजमा कर रखे हैं बल्कि लोगों की धार्मिक भावना और आस्था कालाभ उठाकर भक्तों के साथ अनाचार में भी लिप्त पाया जा रहा हैतो मीराबाई के संघर्ष व त्याग की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।विष्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार पीड़ित नारीत्व को भूलकर मीरा कीभक्ति को नहीं समझा जा सकता। मध्यकाल का पुरूष भक्त होने केलिए जाति–पांति, धन, धर्म, बड़ाई छोड़ता था, तो स्त्री कोलोक–लाज, कुल–शृंखला तोड़नी पड़ती थी। मीरा ने अपनी भक्तिके माध्यम से संपूर्ण मध्यकालीन भारतीय नारी की व्यथा को व्यक्तकिया है। प्रो॰ मैनेजर पाण्डेय कहते है ''कबीर, जायसी और सूर केसामने चुनौतियां भावजगत की थीं। मीरा के सामने भावजगत सेअधिक भौतिक जगत की सीधे पारिवारिक और सामाजिक जीवन कीचुनौतियां, कठिनाईयां थी। उस पुरूष प्रधान सामंती समाज में एकस्त्री, वह भी मेड़ता के राठौर राजपूत कुल की बेटी और मेवाड़ केमहाराणा परिवार की बहू, ऊपर से विधवा। यही था मीरा का अपनालोक। उसके धर्म और उसमें स्त्री की स्थिति का अनुमान किया जासकता है। लेकिन उसके विरूद्ध विद्रोह की कल्पना भी कठिन है।फिर भी मीरा ने उस आंतककारी लोक और उसके भयावह धर्म केविरूद्ध खुला विद्रोह किया। उस विद्रोह के साक्षी है उनका जीवनऔर काव्य।'' जबकि कुमकुम सांगरी ने मीरा की भक्ति पर प्रकाषडालते हुए अपने विस्तृत विवेचन द्वारा स्पष्ट किया है कि ब्राह्मणवादीव्यवस्था सूत्रबद्ध हैं, जिसमें एक चीज को मानने पर सारी चीजों कोमानने के लिए बाध्य होना पड़ता है। मीरा बार–बार अपने पदों मेंकृष्ण को पूर्व जन्म का साथी और मीत बताती है और मीरा की प्रीतिजनम–जनम की है। कृष्ण के लिए लौकिक जगत के बंधनों केअस्वीकार को, मीरा पूर्वजन्म की प्रीति के माध्यम् से सही ठहरानाचाहती हैं। परिवार और कुल त्याग को मीरा माया का त्याग बतातीहैं। मीरा की भक्ति शास्त्र सम्मत भक्ति है, जिसमें पूर्वजन्म, माया,सबका समावेष है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था द्वारा बनाए गए ईष्वर केद्वारा ही मीरा राजसत्ता को चुनौती देती हे, इस प्रकार भक्ति मीराके लिए शरणस्थली भी है और विद्रोह का माध्यम भी।इसीलिए मीरा की प्रासंगिकता आधुनिक काल में और भी बढ़ जातीहै जब समाज में विभिन्न प्रकार की समस्याएं नारी के सामने उपस्थितकी जाती है। मीरा आज की नारी का प्रेरणाश्रोत बन सकती है।

निष्कर्ष :–

मीरा की भक्ति भावना पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि उनके गीतों में नवधा भक्ति के सभी तत्व मौजूद हैं। हालाँकि, महत्वपूर्ण यह है कि मीरा ने नवधा भक्ति के उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए गीत रचना नहीं की; बल्कि उनके गीतों में स्वाभाविक रूप से नवधा भक्ति के सभी अंगों का समावेश हुआ है। यही सहजता, स्वाभाविकता और अकृत्रिमता मीरा के काव्य की विशेषता है, जो उसे अन्य गीतिकाव्य से अलग करती ळेंमीरा की भक्ति पर निर्गुण और सगुण मत के संबंध में विद्वानों के बीच मतभेद अवश्य रहा है। लेकिन मीरा का 'गिरधर नागर' रूप उस मूर्त्ति की

निर्मात्री से गहराई से प्रभावित है। 'गिरधर नागर' की भावनाएँ निश्चित रूप से इस जगत से जुड़ी हैं, और वे मीरा के जीवन के संघर्षों से निकली हैं। इस मूर्ति में मीरा की पीड़ा सम्मिलित होकर एक नया रूप ले लेती है। अभाव समाप्त नहीं होते; बल्कि वे विष को अमृत में परिवर्तित करने की क्षमता रखती हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, डॉ. प्रभात और परशुराम चतुर्वेदी जैसे विद्वानों ने मीरा के निर्गुणोपासना संबंधी पदों को प्रमाणिक मानते हुए भी उन्हें सगुणोपासक भक्त माना है। डॉ. प्रभात ने अपने शोध में यह बताया है कि मीरा की साधना कृष्ण के सगुण–साकार अवतारी रूप पर केंद्रित है, जो उनकी आराधना का एकमात्र लक्ष्य है। परशुराम चतुर्वेदी का मानना है कि मीरा के निर्गुण मत का निरूपण और उनकी चारित्रिक साधनाएँ उन्हें संतमत की अनुयायिनी मानने की ओर प्रेरित करती हैं, लेकिन यह कहना उचित नहीं है।मीरा ने अपने कई पदों में कृष्ण को परम ऐश्वर्यशाली और लीलामय भगवान के रूप में प्रस्तुत किया है। परिता मुक्ता का कहना है कि "मीरा की भक्ति शास्त्र और समाज की परंपरागत मान्यताओं से भिन्न है।" मीरा राणा के लिए चूड़ियाँ नहीं पहनतीं और विधवा होने पर भी कृष्ण के लिए श्रृंगार करना चाहती हैं। यह बात उनकी भक्ति को उनके संघर्ष और विद्रोह से अलग नहीं करती।मीरा की कविताओं की विशेषता है उनकी सच्ची अनुभूति, मार्मिक संवेदना और हार्दिक आवेग। उन्होंने अपने जीवन में जो दर्द सहा, वही उनके काव्य में प्रकट होता है। 'दरद–दिवाणां' का 'दरद' उनकी अनिर्वचनीय अनुभूति को दर्शाता है। मीरा की वेदना उनके जीवन के अनुभवों से उत्पन्न होती है, जो आत्मा की गहराइयों को छू जाती है। उनकी विरह–वेदना में जो मार्मिकता है, उसका आधार उनकी सच्ची अनुभूति और निष्कलंक अभिव्यक्ति है।

इस प्रकार, मीरा के पदों में सगुण मत की स्पष्ट झलक मिलती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मीरा के यहाँ एक साथ निर्गुण और सगुण भक्ति का स्वरूप विद्यमान है। 'गिरिधर नागर' की भक्ति सबके प्रति समान है, और यही मीरा की भक्ति की विशेष पहचान है, जो अन्य भक्त कवियों से उन्हें अलग करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. हिन्दी गीतिकाव्य परम्परा और मीराः सं॰ डा॰ मंजु तिवारी, पृ॰ 132, 133, 139
2. मीरा का काव्यः डॉ॰ विष्वनाथ तिवारी, पृ॰ 86, 57, 72
3. स्त्री चेतना और मीरा का काव्यः पूनम कुमारी, पृ॰ 97, 98, 205, 107
4. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्यः मैनेजर पाण्डेय, पृ॰ 41
5. अपहोल्डिग ऑफ कॉमन लाइफ दि कम्युनिटी ऑफ मीरा बाईः परिता मुक्ता, पृ॰ 33, 100
6. इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकलीः कुमकुम सांगरी (7.14 जुलाई 1990) पृ॰ 1468
7. मीरा की पदावलीः पद 13, पद 14, पद 7
8. मीरा बाईः जीवन और भक्तिः डा. राधेश्याम, पृष्ठ – 45, 88, 102
9. भक्ति आंदोलन और इसकी सामाजिक प्रवृत्तियाँः डा. सर्वेश्वर दयाल, पृष्ठ – 66, 74, 89
10. मीरा बाई की कविताएँः डा. नीता यादव, पृष्ठ – 12, 23, 39
11. राजस्थान की संत परंपराः प्रो. अनिल जैन, पृष्ठ – 150, 155, 178
12. मीरा का प्रेमः एक विश्लेषणः डा. सुनीता वर्मा, पृष्ठ – 98, 107, 120
13. मीरा बाईः स्त्रीत्व और भक्तिः डा. रंजीता, पृष्ठ – 30, 60, 77
14. कविता और समाजः मीरा बाई का दृष्टिकोणः कुमकुम सागर, पृष्ठ – 142, 158, 165
15. मीरा बाई की भक्ति की सामाजिक अर्थव्यवस्थाः डॉ. वसंत कुकरेती, पृष्ठ – 21, 54, 89
16. भक्ति के सूत्रः मीरा बाईः डा. जयश्री, पृष्ठ – 35, 44, 90
17. भारत में संत और भक्ति परंपराः प्रो. रघुनंदन शर्मा, पृष्ठ – 113, 126, 140
18. मीरा बाई की रचनाएँः एक समग्र दृष्टिः डा. चंद्रप्रकाश, पृष्ठ – 75, 82, 95
19. मीरा बाईः सांस्कृतिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्यः डा. लीलाधर, पृष्ठ – 55, 66, 80
20. मीरा बाईः कवयित्री और संतः डा. राधा किशोर, पृष्ठ – 100, 123, 145